प्राक्कथन
आमुख
प्रस्तावना

अध्याय एक
यदुवंश को शाप
अध्याय का सारांश
कृष्ण द्वारा पृथ्वी का भार उतारने का प्रबन्ध
यदुओं के विनाश के कारण
भगवान् के वंशजों का कभी-कभी गर्वित हो जाना
कृष्ण : समस्त सौन्दर्य के आगार
राजा परीक्षित द्वारा पूछा जाना : यदुओं को किस तरह शाप दिया गया
कृष्ण द्वारा मुनियों को पिण्डारक भेजना
तरुण यदुओं का उद्धत आचरण
लौह-मूसल का शाप
कृष्ण के कार्यकलाप संसारी बुद्धि से परे

अध्याय दो
नौ योगेन्द्रों से महाराज निमि की भेंट
अध्याय का सारांश
नारद मुनि का वसुदेव के घर आना
शुद्ध भक्तगण पतितों पर दयालु
कृष्ण का ज्ञान सारे भय को नष्ट करने वाला
नारद द्वारा वसुदेव के प्रश्नों का उत्तर
श्रीमद्भागवत:पूर्ण दिव्य वाङ्मय
ऋषभदेव के नौ पुत्र
राजा निमि द्वारा नौ योगेन्द्रों की पूजा
मानव-जीवन का महान् अवसर
कृष्ण का अपने शुद्ध भक्तों के वशीभूत हो जाना
भागवत धर्म:भगवान् की भक्ति
कृष्ण के आनन्द हेतु कर्म करना
मानसिक चिन्तन के द्वन्द्व से परे
शुद्ध भगवत्प्रेम के लक्षण
भक्त द्वारा हर वस्तु को कृष्ण से सम्बद्ध देखना
परम आध्यात्मिक शान्ति
महाभागवत के गुण

मध्यम भक्त के गुण
भौतिकतावादी भक्त के लक्षण
शुद्ध भक्त का अतिरिक्त वर्णन
शुद्ध भक्त भौतिक कष्ट से विमोहित नहीं होता
शुद्ध भक्त सकाम कर्म से मुक्त
कृष्ण के चरणकमलों की शरण
मनुष्य के हृदय को निर्मल होना चाहिए

अध्याय तीन

माया से मुक्ति

अध्याय का सारांश
राजा निमि द्वारा मायाशक्ति के विषय में जिज्ञासा
जीवों के प्रकार
ब्रह्माण्ड का संहार
''तुम और क्या सुनना चाहते हो''
भौतिक जगत में स्थायी सुख नहीं
प्रामाणिक गुरु की खोज
गुरु शिष्य का जीवन है
शिष्य के गुण
श्रद्धा की परिभाषा
कृष्ण को सर्वस्व अर्पण
भक्तों द्वारा कृष्ण की महिमाओं की निरन्तर चर्चा
भगवान् का दिव्य पद
चिनगारियाँ अग्नि को प्रकाशित नहीं कर सकतीं
परमेश्वर की बहुविध शक्तियाँ
आत्मा का स्वभाव
कर्मयोग की विधि
बाल-स्वभाव के लोग ही सकाम कर्मों के प्रति अनुरक्त
भौतिक कर्म के बन्धन से मुक्ति
प्रामाणिक शिष्य के कर्तव्य
अर्चाविग्रह पूजन

अध्याय चार

राजा निमि से दुर्मिल द्वारा ईश्वर के अवतारों का कथन

अध्याय का सारांश
राजा निमि द्वारा कृष्ण के अवतारों के बारे में जिज्ञासा

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का प्राकट्य
नर-नारायण ऋषि पर कामदेव का आक्रमण
भगवान् द्वारा अनेक सुन्दरियों का प्राकट्य
कृष्ण के मुख्य अवतार

अध्याय पाँच

नारद द्वारा वसुदेव को दी गई शिक्षाओं का समापन

अध्याय का सारांश
ईश-पूजा न करने वालों का गन्तव्य
अल्पज्ञान अत्यन्त घातक
धूर्त भौतिकतावादी भक्तों को नहीं चाहते
कृष्ण परम आराध्य
सम्पत्ति का आध्यात्मिक प्रगति के लिए उपयोग
ईश्वर से द्वेष करने वालों द्वारा नास्तिकतावादी विज्ञान का प्रचार
सतयुग के लोग शान्त
समस्त राजाओं के राजा
श्री चैतन्य का अवतार
ध्यान की प्रामाणिक विधि
श्री चैतन्य का अतिरिक्त वर्णन
कलियुग सर्वश्रेष्ठ युग
भूत, वर्तमान तथा भविष्य
वृक्ष के मूल को सींचना
वसुदेव तथा देवकी द्वारा कृष्ण को पुत्र-रूप में स्वीकार करना
कृष्ण सामान्य बालक नहीं

अध्याय छह

यदुवंश का प्रभास गमन

अध्याय का सारांश
ब्रह्मा तथा देवताओं का द्वारका गमन
परम कारण अचिन्त्य
भगवान् अपने दासों पर कृपालु
जय-पराजय भगवान् के हाथ में
कृष्ण अपने भक्तों के प्रेम के वशीभूत
कृष्ण के विषय में श्रवण करना सभी समस्याओं का हल
भगवान् द्वारा यदुओं को प्रभास जाने की सलाह
उद्धव का कृष्ण के पास पहुँचना

शुद्ध भक्त कृष्ण को कभी त्याग नहीं सकता

अध्याय सात
भगवान् कृष्ण द्वारा उद्धव को उपदेश
अध्याय का सारांश
कृष्ण का आध्यात्मिक धाम
कलियुग के कटु-कलह में फँसी पतितात्माएँ
मायावी मानसिक स्तर
स्वरूपसिद्ध व्यक्ति अबोध बालक के समान
भौतिक शरीर के साथ झूठी पहचान
मानव रूप में आत्मा
राजा यदु तथा अवधूत
काम तथा लोभ की महान् दावाग्नि
पृथ्वी सहिष्णुता की प्रतीक
आत्मा किस तरह से वायु के समान
भौतिक शरीरों का प्रकट और लोप होना
मूर्ख कबूतर की कथा
मृत्यु सारी वस्तुओं का अन्त कर देगी

अध्याय आठ
पिंगला की कथा
अध्याय का सारांश
अजगर से शिक्षा
साधु को स्थान-स्थान भ्रमण करना चाहिए
गाढ़ी कमाई की चोरी
जीभ को वश में करने की महत्ता
पिंगला अपनी भौतिक स्थिति से ऊब गई
भौतिक शरीर घर के तुल्य
काल रूपी विकराल सर्प

अध्याय नौ
पूर्ण वैराग्य
अध्याय का सारांश
भक्त की तुष्टि पूर्ण ज्ञान पर आधारित
योगाभ्यास का एक ही लक्ष्य

भौतिक चिन्ता की तरंगों से छुटकारा
भौतिक शरीर का दुखद अन्त
चरम जीवन-सिद्धि के लिए प्रयत्न

अध्याय दस
सकाम कर्म की प्रकृति
अध्याय का सारांश
पापकर्मों से बचना चाहिए
सूक्ष्म तथा स्थूल शरीर
दक्ष शिष्य तथा दक्ष गुरु
लोगों को मृत्यु से उबारने में विज्ञानी असफल
काल रूप भगवान् से बड़े बड़े देवता भी भयभीत

अध्याय ग्यारह
बद्ध तथा मुक्त जीवों के लक्षण
अध्याय का सारांश
आत्मा न तो बद्ध है, न ही मुक्त
वृक्ष पर दो पक्षियों का रूपक
प्रबुद्ध व्यक्ति
कृष्ण की महिमा से रहित वैदिक वाङ्मय व्यर्थ
कृष्ण की लीलाओं को सुनाने से ब्रह्माण्ड की शुद्धि
भगवान् का आध्यात्मिक शरीर
सन्त-पुरुष के गुण
भक्त के कार्यकलाप
भगवान् को कैसे पूजें
केवल भक्ति: भगवान् की शुद्ध भक्ति

अध्याय बारह
वैराग्य तथा ज्ञान से आगे
अध्याय का सारांश
आत्म-साक्षात्कार के लिए भक्तों की संगति पर्याप्त
वृन्दावनवासी कृष्ण के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते
गोपियाँ:उनके द्वारा कृष्ण का प्रेमयुक्त स्मरण
उद्धव का मन संशयग्रस्त
वृद्धावस्था, मृत्यु तथा अन्य आपदाओं के कटु फल

प्रस्तावना

अध्याय तेरह
हंसावतार द्वारा ब्रह्मा-पुत्रों के प्रश्नों के उत्तर
अध्याय का सारांश
सतोगुण से धार्मिक सिद्धान्तों का उदय
भौतिक जीवन में लगे हुओं का भविष्य अंधकारमय
ब्रह्मा के पुत्रों द्वारा योग के लक्ष्य की जिज्ञासा
हंसावतार का प्राकट्य
नास्तिक दर्शन का निराकरण
चेतना की चौथी अवस्था
आध्यात्मिक आनन्द की खोज की जाय
अध्याय चौदह
श्री उद्धव से श्रीकृष्ण का योग-वर्णन
अध्याय का सारांश
जीवन के अप्रामाणिक दर्शन
शुद्ध भक्त कृष्ण को प्रिय हैं
कृष्ण-प्रेम की ज्वलित अग्नि
स्त्रियों के प्रति आसक्ति
भगवान् के स्वरूप का ध्यान
अध्याय पन्द्रह
भगवान् कृष्ण द्वारा योग-सिद्धियों का वर्णन
अध्याय का सारांश
अठारह प्रकार की योग-सिद्धियाँ
केवल भगवत्कृपा से योग-सिद्धि प्राप्त होती है
सारा ब्रह्माण्ड भगवान् के आदेश से गतिशील है
वास्तविक योग-सिद्धि तो भक्ति है
अध्याय सोलह
भगवान् की विभूतियाँ
अध्याय का सारांश
कृष्ण अनादि तथा अनन्त
कृष्ण की महिमा का अनुमान नहीं लगाया जा सकता
निर्भयता का उपहार
जीवन का उद्देश्य दिव्य भगवान् को समझना है
अध्याय सत्रह
भगवान् कृष्ण द्वारा वर्णाश्रम-प्रणाली का वर्णन

अध्याय का सारांश
इस लुप्त ज्ञान को कौन बतायेगा ?
मानव समाज के वृत्तिपरक तथा सामाजिक विभाग
बच्चों की उचित शिक्षा
आचार्य: आध्यात्मिक विज्ञान का दिव्य प्रोफेसर
विवाहित जीवन
भक्तों को दान देने वालों का भगवान् द्वारा उन्नयन
पारिवारिक संगति यात्रियों के संक्षिप्त मिलन जैसी
अध्याय अठारह
वर्णाश्रम धर्म का वर्णन
अध्याय का सारांश
वानप्रस्थ के कर्तव्य
संन्यासी के कर्तव्य
संन्यासी अकेले ही पृथ्वी-भ्रमण करे
परमहंस का स्वभाव
स्वरूपसिद्ध व्यक्ति किसी भी वस्तु को कृष्ण से भिन्न नहीं देखता
अध्याय उन्नीस
आध्यात्मिक ज्ञान की सिद्धि
अध्याय का सारांश
मोह का शास्त्रीय ज्ञान
भौतिक जीवन की सर्पों से पूर्ण अंधेरे बिल से तुलना
भगवान् कृष्ण द्वारा भीष्म के उपदेशों की पुनरुक्ति
कृष्ण-प्रेम उन्नत करने के सिद्धान्त
मनुष्यों के लिए वांछित गुण
अध्याय बीस
शुद्ध भक्ति ज्ञान तथा वैराग्य से आगे है
अध्याय का सारांश
कर्म के गुण तथा दोष
ज्ञान, कर्म तथा भक्ति के मार्ग
स्वर्ग तथा नरक के वासी मनुष्य-जन्म के इच्छुक
मन को अपने वश में किया जाय
शुद्ध भक्ति की शुरुआत
हृदय ग्रंथि को खोलना
पूर्ण विरक्ति स्वतंत्रता की सर्वोच्च अवस्था
अध्याय इक्कीस
भगवान् कृष्ण द्वारा वैदिक पथ की व्याख्या

अध्याय का सारांश
पुण्य तथा पाप
आधुनिक विज्ञान का नास्तिक दर्शन
शुद्धि तथा अशुद्धि
मंत्रों का सही उच्चारण
वैदिक ज्ञान का वास्तविक प्रयोजन
मनोरंजनकर्ताओं, राजनीतिज्ञों तथा खिलाड़ियों की पूजा
वैदिक ध्वनि असीम, अगाध तथा अथाह
अध्याय बाईस
भौतिक सृष्टि के तत्त्वों की गणना
अध्याय का सारांश
भौतिक तत्त्वों की गणना के बारे में दार्शनिकों में मतभेद
प्रकृति के तीन गुण
उद्धव द्वारा शरीर तथा आत्मा में अन्तर के विषय में जिज्ञासा
क्या यह जगत सत्य है?
अपनी पूर्व पहचान की विस्मृति ही मृत्यु है
शरीर में निरन्तर रूपान्तर होता रहता है
इन्द्रियतृप्ति का अनुभव मिथ्या है
अध्याय तेईस
अवन्ती ब्राह्मण का गीत
अध्याय का सारांश
भक्त किसी भी निजी अपमान को सह लेता है
कृपणों की सम्पत्ति आत्म-पीड़न का कारण
सम्पत्ति का सही उपयोग
मन ही सुख-दुख का कारण
कर्म मोहमयी चेतना पर आधारित
त्रिदण्ड संन्यास का अर्थ
अध्याय चौबीस
सांख्य दर्शन
अध्याय का सारांश
आधुनिक समाज का ज्ञान चिन्तनशील तथा परिवर्तनशील
स्वर्गलोक
भौतिक प्रकृति भगवान् की शक्ति है
प्रलय
अध्याय पच्चीस
प्रकृति के तीन गुण तथा उनके परे

अध्याय का सारांश
प्रकृति के गुणों के लक्षण
गुणों का भगवान् कृष्ण पर प्रभाव नहीं
शुद्ध चेतना से निर्भयता तथा विरक्ति उत्पन्न
रजो, सतो तथा तमोगुण में गन्तव्य
भगवान् कृष्ण का ज्ञान गुणों से परे
श्रद्धा, भोजन तथा सुख के विभाग
बुद्धिमान लोग गुणों को लाँघ कर कृष्ण की सेवा करते हैं
अध्याय छब्बीस
ऐल-गीत
अध्याय का सारांश
भौतिकतावादी मार्ग गहन अंधकारमय गर्त में ले जाता है
राजा पुरूरवा का शोक
काम की दग्ध अग्नि
शरीर का स्वामी कौन?
मन को शान्त करने की युक्ति
कृष्ण के श्रवण तथा कीर्तन से पाप नष्ट होते हैं
कृष्ण के भक्तों की महिमा
अध्याय सत्ताईस
देवपूजन-विधि के विषय में कृष्ण के उपदेश
अध्याय का सारांश
अर्चाविग्रह (देव) पूजा के विषय में उद्धव के प्रश्न
अर्चाविग्रहों के आठ प्रकार
अर्चाविग्रह को स्नान कराना
प्रेम ही प्रत्येक भेंट का सार
पूजा में प्रयुक्त पात्रों का मार्जन
अर्चाविग्रह में प्रवेश करने के लिए परमात्मा का आवाहन
भगवान् के पार्षदों तथा अन्यों को कैसे पूजा जाय
अर्चाविग्रह को स्नान कराना तथा सजाना
अर्चाविग्रह को कौन-कौन से भोजन अर्पित किये जायँ
अग्नि-यज्ञ तथा अन्य कर्मकाण्ड
ध्यान, पूजा तथा कीर्तन की विस्तृत विवेचना
अर्चाविग्रह की स्तुतियाँ
शुद्ध अर्चाविग्रह-पूजा के लाभ
ब्राह्मणों तथा देवताओं के यहाँ चोरी का खतरा
अध्याय अट्ठाईस

ज्ञानयोग
अध्याय का सारांश
जगत को मोहमय तथा सत्य देखना
भौतिक प्रकृति नास्तिक को कुचल देती है
भय का कारण : शरीर के साथ पहचान
जगत का अनुभव करने वाला कौन?
मिथ्याभिमान ही समस्त कष्ट की जड़
सर्वकारण कारणम्
भौतिक विविधता के माध्यम से कृष्ण अपने आप को
प्रकट करते हैं
आत्मा का पदार्थ से भेद
नवदीक्षित भक्तों के लिए चेतावनी
पंडित जनों द्वारा सकाम कर्म का परित्याग
अज्ञान का विनाश
भगवान् तथा हम में असमानता
छद्म पंडितों की विडम्बना
योग की रुकावटों पर विजय
योग द्वारा शारीरिक सिद्धि : व्यर्थ का लक्ष्य
अध्याय उन्तीस
भक्तियोग
अध्याय का सारांश
योग विषयक श्री उद्धव की शंकाएँ
कृष्ण के चरणकमल : हंसवत् पुरुषों के एकमात्र आश्रय
भगवान् कृष्ण से हम उऋण नहीं
कृष्ण की सेवा में मन को टिकाना
सबों में ईश्वर का दर्शन करने से सबों को एकसमान देखना
आध्यात्मिक प्रबुद्धता की सर्वश्रेष्ठ विधि
कृष्ण की भक्ति : बुद्धिमानों की बुद्धि
परब्रह्म की शिक्षा देने वाले को कृष्ण स्वयं को दे डालते हैं
दैवी ज्ञान पाने की पात्रता
कृष्ण में हर वस्तु प्राप्य
उद्धव का हर्षातिरेक
कृष्ण का उद्धव को अन्तिम उपदेश
उद्धव का बदरिकाश्रम के लिए प्रस्थान
अध्याय तीस
यदुवंश का संहार

अध्याय का सारांश
भगवान् कृष्ण समस्त सौन्दर्य की पराकाष्ठा
यदुवंश को कृष्ण का उपदेश
यदुवीरों का प्रभास गमन
यादवों की उन्मत्तता
यदुओं द्वारा एक-दूसरे का संहार
यादव योद्धाओं से कृष्ण तथा बलराम का युद्ध
श्री बलराम का अन्तर्धान होना
शिकारी के तीर से कृष्ण के पैर में प्रहार
शिकारी जरा का सन्ताप
कृष्ण द्वारा जरा को वैकुण्ठ भेजना
कृष्ण के हथियार तथा रथ वैकुण्ठ को वापस
कृष्ण द्वारा अपने सारथी को द्वारका जाने का आदेश
अध्याय इकतीस
भगवान् श्रीकृष्ण का अन्तर्धान होना
अध्याय का सारांश
कृष्ण का अन्तर्धान देखने के लिए महापुरुषों का एकत्र होना
भगवान् कृष्ण का अपने धाम वापस जाना
कृष्ण का प्राकट्य तथा विलोप अभिनेता के प्रदर्शन की भाँति
कृष्ण का मृत्यु से परे होने का साक्ष्य
देवकी, वसुदेव तथा अन्यों की वेदना
कृष्ण के सम्बन्धियों का चितारोहण
अर्जुन का *भगवद्गीता* का स्मरण करके सान्त्वना पाना
द्वारका का जलमग्न होना
श्रोताओं को वर
परिशिष्ट
लेखक परिचय